आचार्य नें बताए पारिवारिक शान्ति के सूत्र
सहन शक्ति के अभाव में परिवार में पैदा होता है विघटन

रतनगढ़ : 8 जनवरी 2011

तेरापंथ के ग्यारहवें अधिशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने परिवार के साथ कैसे जियें के संदर्भ में कहा कि आज निजी स्वार्थों के कारण परिवारों में कटुता पैदा हो रही है। परिवार में एक दूसरे की रुचि का सम्मान करना चाहिए। गृहस्थ परिवार में अनेक तरह के सम्बन्ध होते है – सम्बन्धों की दुनिया होती है ! मां–बाप, भाई–बहन, चाचा, मामा आदि एक दूसरे से जुड़े हुए है ! स्वार्थ एक ऐसा बाधक तत्व है जो परिवार में कटुता पैदा करता है। कोई परिवार का सदस्य यदि कुछ गलत कर भी दें तो उसे सहन करना चाहिए। उन्होंने एक सूत्र दिया कि सहना चाहिए, कहना चाहिए और शांति से रहना चाहिए। केवल सहना ही नहीं, गलती को मौके पर कहना भी चाहिए।

आचार्य महाश्रमण ने संबोधित करते हुए कहा कि परिवार में एक–दूसरे के लिए अपना स्वार्थ त्याग करें। जीवन में दूरदर्शिता अपनायें। परिवार का भला हो तो व्यक्ति त्याग करें, गांव का भला हो तो परिवार त्याग करें, राष्ट्र का भला हो तो गांव त्याग करें और आत्मा का भला हो तो मनुष्य को पृथ्वी का भी त्याग कर देना चाहिए। व्यक्ति हित पर जहां स्वार्थ हावी हो जाता है तो परिवार में टूटन की स्थिति पैदा हो सकती है। उन्होंने कहा कि व्यक्ति अपने कर्त्तव्यों पर ध्यान दें तो परिवार में जीवन शांतिमय व्यतीत हो सकता है। सहने की क्षमता न होने पर परिवार में विघटन पैदा हो सकता है। बच्चों को अच्छे संस्कार देकर संस्कारवान बनायें।

धर्मसंघ की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि परिवार साधु–साध्वियों का भी होता है पर सम्बन्ध गुरु–शिष्य या गुरु–भाई का ही होता है। शिष्य गुरु की आज्ञा का पालन करे। उन्होंने कहा कि दुराग्रह ना हो। आग्रह की वृद्धि होती है तो बाधाएं आती है। पारिवारिक जीवन शांतिमय होना चाहिए। कार्यक्रम का प्रारम्भ जैन श्वेतांबर तेरापंथ महिला मंडल के गाये गीत से शुरु हुआ। महिला मंडल की तरफ से मंच संचालन पुष्पा बैंगानी ने किया। समणी नियोजिका समणी मधुरप्रज्ञा ने भी परिवार के साथ कैसे जियें पर विस्तार से बताते हुए कहा कि एक–दूसरे पर पूर्ण विश्वास रखें। जयपुर से विहार कर आये मुनि धर्मचंद जी 'पियूष' ने आचार्य श्री महाश्रमण के स्वागत में कहा कि आचार्य श्री महाश्रमण में गणाधिपति तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ दोनों को ही देखा जा सकता है। मेवाड़ तेरापंथ कान्फ्रेंस की ओर से बोलते हुए भूतपूर्व जज श्री बसंतीलाल बाबेल ने कहा कि परिवार की शांति व्यवस्था के लिए अहंकार का त्याग, संवेदनशीलता, सहनशीलता, विश्वास व पाश्चात्य संस्कृति के अन्धानुकरण की प्रवृति का त्याग आवश्यक है। कार्यक्रम का संचालन भंवरलाल सिंघी ने किया। गोलछा ज्ञान मंदिर में दूर–दूर से आए सैंकड़ों श्रावकों के साथ स्थानीय विधायक राजकुमार रिणवां भी उपस्थित थे ।

मीडिया संयोजक
रणजीत दूगड़
+91 9831017467

आचार्य श्री महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति, सतनगढ

रतनगढ़